2

मनोरम केरल

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में दक्षिण भारत के राज्य केरल की प्राकृतिक छटा, इतिहास, संस्कृति, परंपरा, कला, त्योहार, व्यवसाय आदि से परिचित करवाया गया है। यह पाठ विद्यार्थियों में विभिन्न संस्कृतियों, लोकमान्यताओं एवं भाषाओं के प्रति सम्मान व गर्व की भावना जागृत करेगा।

पाठ से पूर्व

- दक्षिण भारत के चार प्रमुख राज्यों व उनकी राजधानियों के नाम बताइए।
- भारत के मानचित्र में केरल व उसके पड़ोसी राज्यों की स्थिति को दर्शाइए।

भारत के दक्षिण-पश्चिम में स्थित केरल एक छोटा परंतु सबसे सुंदर और **नयनाभिराम** राज्य है। केरल को 'गॉड्स ऑन कंट्री' (God's Own Country) अर्थात 'भगवान का अपना देश/घर' भी कहा जाता है। यहाँ की प्राकृतिक छटा और दूर-दूर तक फैले नारियल के वृक्षों की कतारें मन को मोह लेती हैं। केरल को भारत के 'मसालों का बगीचा' भी कहा जाता है। केरल की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा वहाँ के रीति-रिवाज, रहन-सहन और त्योहारों में देखी जा सकती है।

'केरल' शब्द की **व्युत्पत्ति** के संबंध में विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार 'चेर-स्थल', 'कीचड़' और 'अमल प्रदेश' शब्दों के योग से 'चेरलम' बना था, जो बाद में 'केरल' बन गया। 'केरल' शब्द का अर्थ है— वह **भूभाग** जो समुद्र से निकला हो। समुद्र और पर्वत के संगम-स्थल को भी केरल कहा जाता है। यही नहीं, स्थानीय मलयालम भाषा में ताड़ के वृक्षों को 'केरा' कहा जाता है और इन वृक्षों की **बहुलता** के कारण भी संभवतः इस राज्य को केरल कहा जाता है। 14 ज़िलों में बँटे इस प्रदेश की राजधानी तिरुवनंतपुरम है।

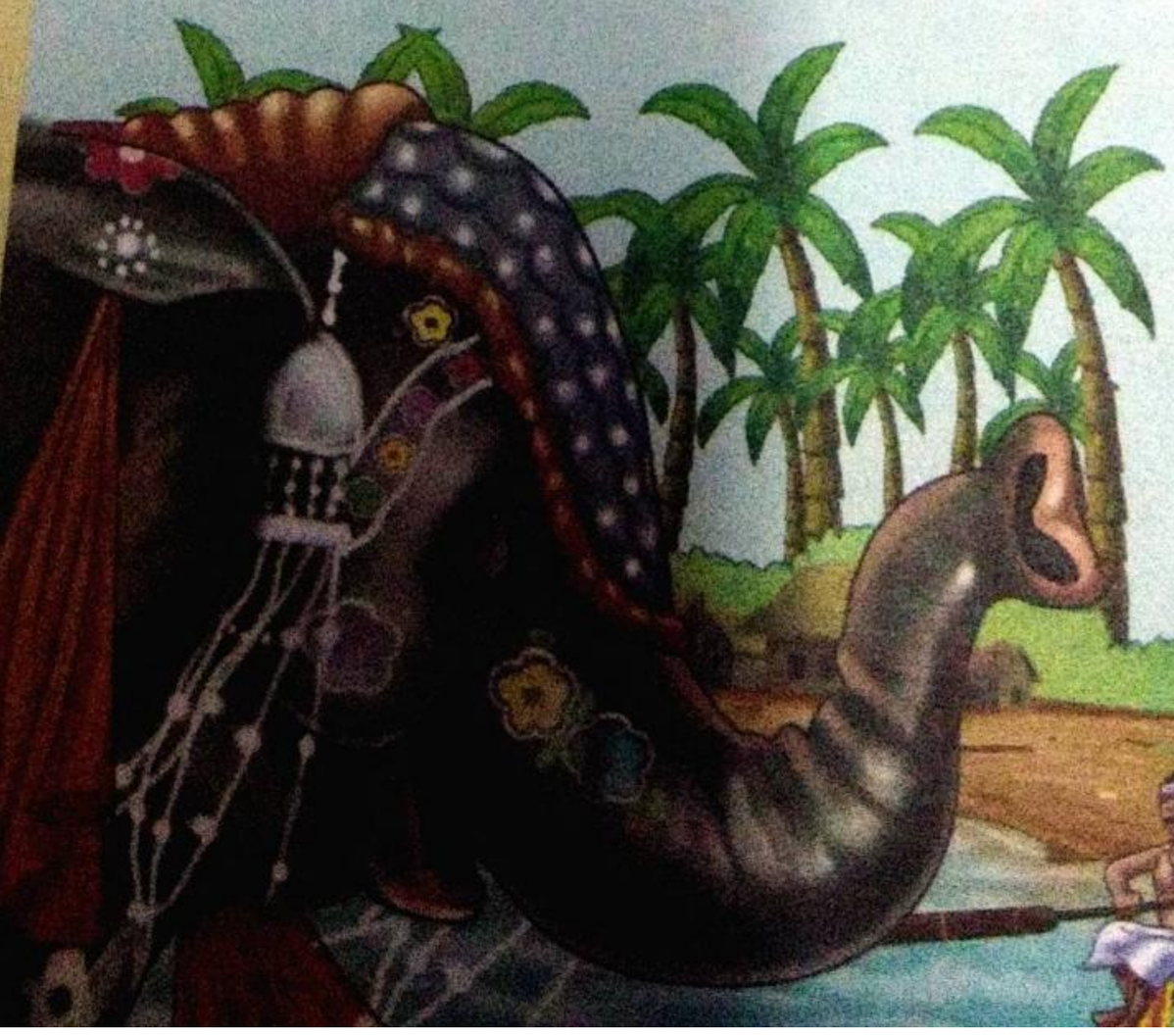

Scanned by TapScanner

केरल से जुड़ी पौराणिक कथाओं एवं स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार परशुराम से भी इसका संबंध है। कहा जाता है कि इक्कीस बार धरती को विजित करने के बाद परशुराम के मन में तपस्या करने का विचार आया, परंतु वे तपस्या करते कहाँ, क्योंकि जिन राज्यों को 'क्षत्रियविहीन' करके उन्होंने विजित किया था, उन्हें तो उन्होंने तत्काल ही दान कर दिया. तो क्या दान की हुई भूमि पर तपस्या करते— ऐसा विचार मन में लेकर समुद्र-तट पर खड़े परशुराम ने अपना परशु अस्त्र समुद्र में फेंका। समुद्र के भीतर जिस स्थान पर वह अस्त्र गिरा, वहाँ से उसी आकार का भूमि का एक टुकड़ा समुद्र से बाहर निकला और इस तरह केरल अस्तित्व में आया। जल्दी ही यह टापू सुरम्य और हरा-भरा हो गया, जिस पर परशुराम ने तपस्या की। बाद में यही टापू बसा और प्रकृति की मनमोहक छवि और हरियाली के कारण उसने दूर-दूर तक लोगों का मन मोह लिया।

स्वतंत्रता के कुछ ही वर्षों बाद केरल अपने मौजूदा स्वरूप में सामने आया। स्वतंत्र भारत में जब सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रयासों से छोटी-छोटी रियासतों का विलय होना शुरू हुआ, तब त्रावणकोर तथा कोचीन रियासतों को मिलाकर 1 जुलाई, 1949 को 'त्रावणकोर कोचीन' राज्य बना दिया गया। राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के अंतर्गत 'त्रावणकोर कोचीन राज्य' तथा 'मालाबार' को मिलाकर 01 नवंबर, 1956 को 'केरल' राज्य का निर्माण किया गया। हिंदुओं और मुसलमानों के अतिरिक्त यहाँ ईसाई भी बड़ी संख्या में रहते हैं। यहाँ भौगोलिक दृष्टि से पर्वतीय क्षेत्र, घाटी तथा मध्य में मैदानी और अरब सागर के तटवर्ती क्षेत्र शामिल हैं। इसके अलावा यहाँ अनेक नदियाँ और स्वच्छ जल से भरे तालाब भी हैं। नृत्य, संस्कृति, परंपराओं, रीति-रिवाज़ों तथा अन्य कलाओं के लिहाज़ से भी केरल एक अत्यंत संपन्न राज्य है। केरल का कथकली नृत्य दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

Scanned by TapScanner

राज्य में कुल 44 नदियाँ हैं, जिनमें 41 अरब सागर की ओर बहती हैं और तीन पूर्व की ओर। समुद्री झील का आकर्षण देखते ही बनता है। केरल में अनेक **अभयारण्य** भी हैं, जिनमें पेरियार नदी के किनारे बना 'पेरियार अभयारण्य' अत्यंत प्रसिद्ध है। पेरियार अभयारण्य में हाथियों के समूहों को एक साथ घूमते-फिरते तथा विभिन्न क्रियाकलापों में लीन देखना बड़ा ही आनंदमय लगता है। पेरियार नदी इस अभयारण्य के अनूठे प्राकृतिक सौंदर्य को और बढ़ा देती है।

केरल में प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूप और छवियाँ नज़र आती हैं। मुख्य रूप से यहाँ दो प्रकार की जलवायु पाई जाती है। एक ओर समुद्र तट की **समशीतोष्ण** जलवायु है और दूसरी ओर पहाड़ी स्थलों की सुरम्य जलवायु। हालाँकि केरल कहते ही समुद्र के किनारे फैला हुआ अंचल ही आँखों के आगे आता है और केरल की मुख्य पहचान भी उसी से है, परंतु केरल का पहाड़ी अंचल भी कम खूबसूरत नहीं है। दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों की हरियाली दूर से ही आँखों को मोह लेती है।

केरल के निवासी शांत स्वभाव के होते हैं, लेकिन त्योहारों के समय उनका उल्लास देखते ही बनता है। नवरात्रि पर्व पर यहाँ सरस्वती पूजा होती है। महाशिवरात्रि पर्व पेरियार नदी के तट पर धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर यहाँ अपार भीड़ होती है। सबरीमाला के अय्यप्पा मंदिर में 'मकरविलक्कु' भी आयोजित होता है। यह पर्व इकतालीस दिनों तक चलता है।

यहाँ के त्योहारों में 'ओणम' सबसे प्रमुख है, जिसे पूरा केरल बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाता है। ओणम के साथ राजा महाबलि की एक पौराणिक कथा जुड़ी है। कहते हैं कि महाबलि केरल के यशस्वी राजा थे, जिनका दूर-दूर तक नाम था। उनकी कीर्ति और लोकप्रियता को देखकर इंद्र को भी उनसे ईर्ष्या हो गई। तब भगवान विष्णु वामन का रूप धारण करके आए और दानवीर राजा महाबलि से तीन डग ज़मीन माँगी। वामन ने विराट रूप धारण किया। एक डग में पूरी पृथ्वी और दूसरे में पूरा आकाश नाप लिया। अब तीसरा पैर कहाँ रखें, हारकर राजा महाबलि ने अपना सिर झुका दिया। विष्णु ने अपना पैर उनके सिर पर रखा और उन्हें पाताल भेज दिया। कहते हैं कि साल में एक दिन राजा महाबलि अपनी प्रजा से मिलने आते हैं और प्रजा अत्यधिक उत्साह से उनका स्वागत करती है।

Scanned by TapScanner

इस दिन घरों को खूब अच्छी तरह सजाया जाता है। राजा बलि और भगवान विष्णु की मूर्तियाँ स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है।

केरल के अन्य पर्वों में नौका-दौड़ का अपना विशेष आकर्षण है। पुन्नमदा झील में 'नेहरू ट्रॉफ़ी नौका दौड़' का आयोजन होता है। त्रिचुर में वडक्कुमनाथ मंदिर में अप्रैल के महीने में पूरम त्योहार मनाया जाता है, जिसमें हाथियों को सजाकर शोभा-यात्राएँ निकाली जाती हैं और आतिशबाज़ी की जाती है। यहाँ क्रिसमस और ईस्टर पुंबा नदी के तट पर 'मरामोन सम्मेलन' के रूप में मनाया जाता है। ईद आदि त्योहार भी यहाँ बड़े प्यार और उल्लास से मनाए जाते हैं।

'कोच्चि' राज्य का सबसे बड़ा समुद्री बंदरगाह है। रबड़ उत्पादन में तो केरल बहुत आगे है। देश में उत्पादित रबड़ का लगभग 90 प्रतिशत रबड़ यहाँ के रबड़ बागानों से प्राप्त होता है। केरल का हस्तशिल्प भी दूर-दूर तक विख्यात है। नारियल की जटाओं से तरह-तरह की सुंदर और कलात्मक सजावटी वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

नारियल, रबड़, काली मिर्च की खेती यहाँ अधिक मात्रा में होती है। अन्य फ़सलों में केला, सुपारी, हलदी, जायफल, दालचीनी, लौंग आदि की खेती भी की जाती है। चावल यहाँ की मुख्य फ़सल है। शिक्षा के लिहाज़ से केरल देश के अग्रणी राज्यों में से है। यहाँ की साक्षरता दर सबसे अधिक है। यहाँ सात विश्वविद्यालय हैं, जिनमें परंपरागत शिक्षा की बजाय व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा पर विशेष ज़ोर दिया जाता है।

केरल का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है। यहाँ का स्वच्छ वातावरण, समुद्री तट, झीलें, पर्वत, जल-प्रपात, वन्य जीवन, आयुर्वेद, वनस्पति **वैविध्य** तथा अनेक त्योहार मन को मोहने वाले हैं। ये सभी मानो हमें केरल आने के लिए **आमंत्रित** करते हैं।

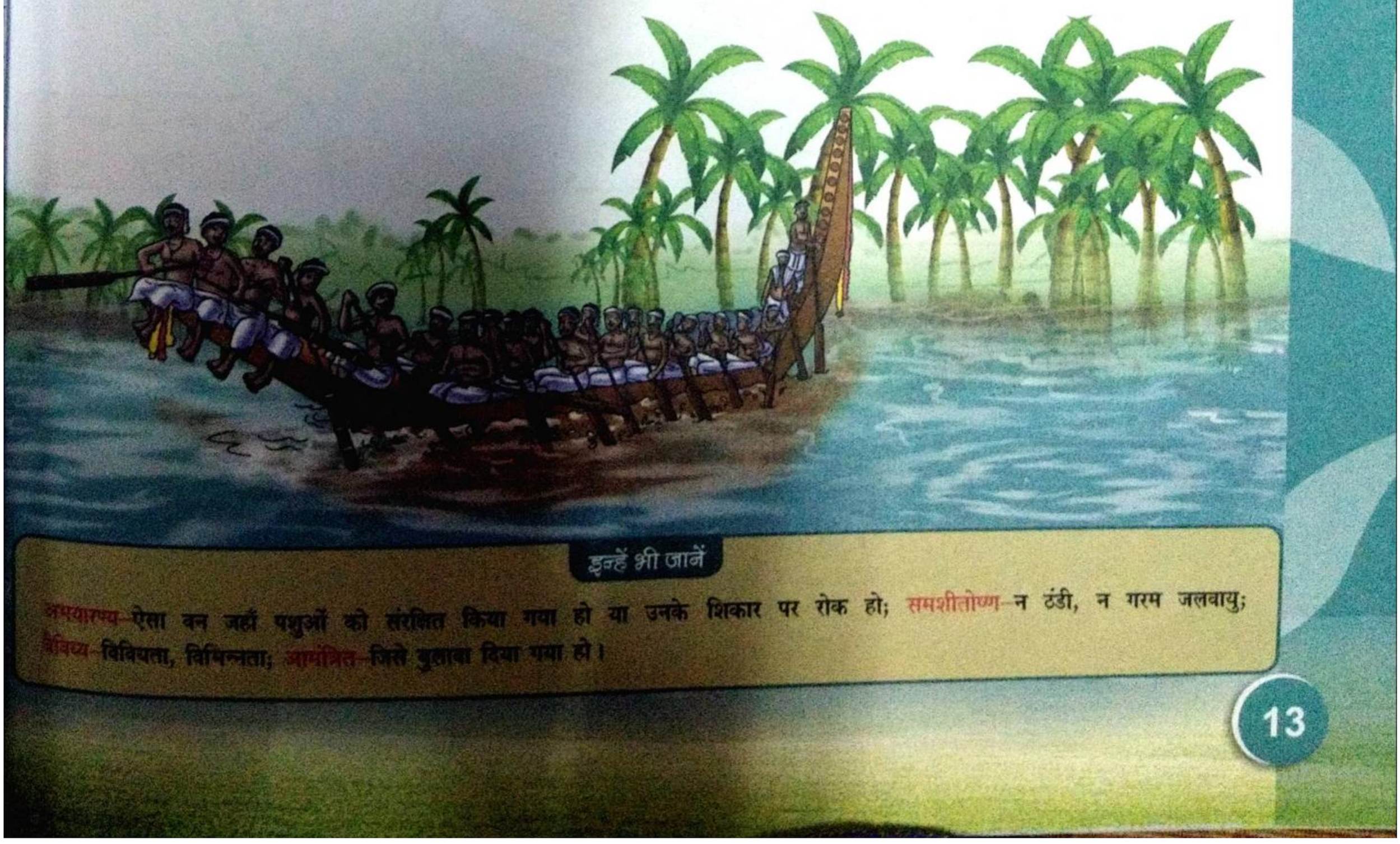

इन्हें भी जानें

अभयारण्य–ऐसा वन जहाँ पशुओं को संरक्षित किया गया हो या उनके शिकार पर रोक हो; समशीतोष्ण–न ठंडी, न गरम जलवायु; वैविध्य–विविधता, विभिन्नता; आमंत्रित–जिसे बुलावा दिया गया हो।

Scanned by TapScanner